।। परम पिस्तावो ग्रंथ ।।
मारवाडी + हिन्दी
(१–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ परम पिस्तावो ग्रंथ लिखंते ||

|| दोहा ||

भगत बिसारी राम की || मिनखा देही पाय ||
पिस्तासी सुखराम के || लख चोरासी मांय ||१||

मनुष्य शरीर मिला और मनुष्य शरीर मिलने पे चौरासी लाख योनी मिटा देनेवाले रामजी की भक्ति नही की तो वह मनुष्य आगे चौरासी लाख योनीयों के महादु:ख मे पडने पर चौरासी लाख योनी मिटा देनेवाले रामजी की भक्ति न करनेके कारण पश्चाताप करता ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कह रहे है। ||१||

जुण जुण पिस्तावतो || मानव देह के काज ||
राम शिवर सुखराम के || वो मोसर हे आज ||२||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,चौरासी लाख के दु:ख मिटाने के लिये हर योनी में रामजी की भक्ति करना चाहता था परंतु हर योनी से रामजी की भक्ति नहीं होती थी इसलिये हर योनी में जिस योनी से रामजी की भक्ति होती ऐसी मनुष्य योनी की चाहना करता था। वह मनुष्य देह आज मिला है इसलिये तु आज से रामस्मरण कर। ।२।

लख चोरांसी भुगत कर || नर तन पायो नीट ||
सुखराम राम शिवर्‍यो नही || तो पसवा पंखी कीट ||३||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,चौरासी लाख योनीयों में दु:ख भोग भोगकर बडे मुश्किल से मनुष्य शरीर मिला है। यदी अभी रामनाम का स्मरण नहीं किया तो आगे फिरसे चौरासी लाख योनी मे दु:ख से ग्रासे हुये पशु,पंछी,कृमी,किटक बनोगे और फिरसे भारी दु:ख भोगोगे। ||३||

मरत लोक मे मानवी || देव लोक में देव ||
सुखीया सब पिस्तावसी || जो भुला हर की सेव ||४||

जिन्होंने रामजी की भक्ति नहीं की ऐसे मृत्युलोक के मनुष्य तथा मनुष्य शरीर छोडके देवता लोको में पहुचे हुये सभी देवता चौरासी लाख योनी में पडने पर हरकी भक्ति न करने के कारण पस्तावा करेंगे ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कह रहे है। ||४||

चोपाई ||

चोरासी बंछ तो नर देही || भगत काज पिस्तायो ||
हल हुँसीयार करो नर शिम्रण || वो मोसर अब आयो ||५||

|| चौपाई ||

जब मनुष्य चौरासी लाख योनीयों में था तब मनुष्य शरीर पाने की चाहना करता था और साथमें लाख चौरासी लाख योनीमें आने के पहले मनुष्य देह था उस देहमें भक्ति नहीं की और चौरासी लाख योनीके शरीर से भक्ति नहीं होती इसका भी पस्तावा करता था। उसी मनुष्य देह का मौका आज आया है। इसलिये होशियार होकर कोई भी विलंब न

करते रामजी का स्मरण करो ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर,नारी को कहते है। ।।५।।

भटकत भटकत नीट मिल्यो हे ।। मानव तन ओतारा ।।
सुरपत देव सकळ सो बंछे ।। मिले न दुजी बारा ।।६।।

यह मानव तन याने चौरासी लाख योनी काटने का अवतार चौरासी लाख योनी में बडे–बडे जुलूम,कष्ट सहकर भटकते भटकते बडे मुश्किल से जरासे समय के लिये मिला है। मनुष्य देह में जप,तप,सत करके स्वर्गादिक के ये सभी देवता बनते है तथा १०१ यज्ञ करके इंद्र बनता है। ऐसे देवता तथा इंद्र एक बार मनुष्य देह छोडने के पश्चात चाहणा करने पर भी उन्हे मनुष्य देह चौरासी लाख योनी भोगे बगैर नही मिलता। ।।६।।

बाळक तरण बुढापो बीतो ।। अजहुं राम न गावे ।।
चोरासी फिर नर तन पायो ।। चाम सोवनी जावे ।।७।।

अरे मनुष्य,तेरा बचपना पुरा बित गया,जवानी बीत गई,मौत कोई भी समय आ सकती ऐसा बुढापा बित गया फिर भी चौरासी लाख योनी के दु:खोसे निकालनेवाले रामनाम को नही गा रहा। अरे मनुष्य,यह नर तन चौरासी लाख योनीयाँ भोगने के बाद मिला है ऐसा यह मनुष्य देह का सुवर्णसरीखा समय जा रहा है। ।।७।।

नर तन खेत नांव कण निपजे ।। मोती पुळका बाया ।।
निपज्या संत साख फळ फूली ।। भर गाड़ा घर लाया ।।८।।

खेत में समय पर बीज बोने से मोती के समान अनाज निपजता है। बोनेवाले की खेती फल–फुलने से मोती समान अनाज गाडों से भरभरकर घर पर आता है। अगर यह बीज समयपर नहीं बोया तो खेती होकर भी खेती फलती फुलती नही और मोती के समान अनाज घर पर आता नहीं इसीप्रकार मनुष्यरुपी खेत में रामनाम बोने से संत निपजते याने संतो के हंस में नाम प्रगटता है और जीव चौरासी लाख योनी मे जाने से मुक्त होता है। ।।८।।

आस आसाडु चाम सोवनी ।। समज बीज नही बायो ।।
अन्त काळ काती को करसो ।। भजन बिना पिस्तायो ।।९।।

जैसे आषाढ के माह में समजकर बीज नहीं बोया तो काती में फसल घर पर नहीं आती है और किसान पस्तावा करता है। इसीप्रकार मनुष्य देहरुपी सुवर्ण अवसर पर रामनाम की भक्ति न करने से अंतकाल में चौरासी काटनेवाला राम घट में नहीं प्रगट हुआ इसका पस्तावा होता। ।।९।।

जाझ फटया जळ थाह न आवे ।। आभ फटया नही थूणा ।।
अन्तकाळ अेसी बिध बरते ।। जे नर भक्त बिहुँणा ।।१०।।

जहाज भरे समुद्र में बिचोबिच है और जहाज बुरी तरह फट गया है जिससे जहाज में थाह

नहीं लगता ऐसा पानी घुसे जा रहा है और जहाज में अटके हुये नर,नारी को सामने मौत दिख रही है, ऐसे ही बादल फट गये है फटे हुये बादलो को कही से भी खंभा नहीं लगाते आ रहा याने बादल फटना रोकते नहीं आ रहा है और विश्राम के सर्व स्थान जलमय हो रहे है और जलमय होने के कारण मौत सामने दिख रही है। इसीप्रकार रामनाम के भक्ति बिना जमदूतो को देखकर मनुष्य की ऐसी बिकट स्थिती होती। ।।१०।।

देख दूत मानव पिस्ताणा ।। अन्तकाळ अब आया ।।
सुखरत कियो न राम संभाल्यो ।। ग्रभ कोल बिसराया ।।११।।

अंतिम समय पर यमदूतो को देखकर नर,नारी मनुष्य देह मिलने पर भी यमदूतोसे बचने का कोई शुभ कर्म नहीं किया,यमदूतो से बचानेवाले रामजी का स्मरन नहीं किया और गर्भ मे रामनाम लेने का और शुभ शुभ कर्म करने का जो करार किया था वह भूल गया, नेकभर भी पुरा नहीं किया इसका पस्तावा करता। ।।११।।

धरम राय जब लेखा मांगे ।। किया कोल चितारे ।।
लीला पांव करे मुँह काळो ।। शिर मे मुगदर मारे ।।१२।।

रामजी के दरबार में मनुष्य तन माँगा और रामनाम की भक्ति करुँगा,रामनामी संतोंकी सेवा करुँगा ऐसा धरमराय से रामजी के दरबार में करार किया था। जीव का अंतीम समय आता,जीव देह त्यागता तब जमदूत धरमराय के सामने पकड्कर ले जाते और खडा करते तब धर्मराय करार के अनुसार जीव ने रामनाम नहीं किया तथा संतों की सेवा नहीं की और नरक में पड्ने सरीखे निच से निच कर्म किये ऐसा चित्र–गुप्त बताते तब,धरमराय जमदूतों कों जीव के हाथ पैर हरे होंगे तबतक अनेक प्रकार के अस्त्रोंसे मारने को कहता, मुँह मार मार कर काला पडेगा जबतक मारने को कहता तथा सिरपर भारी खिलोंसे बनी हुई मुगदर से मरवाता। ।।१२।।

हँस हँस किया न छुटे रोयां ।। किया कबाडा हाता ।।
घड़ी घड़ी दम दम का लेखा ।। चित्र गुप्तर के खाता ।।१३।।

जीव यहाँ पर हँस–हँसकर याने आनंद ले लेकर दुजों को अती दु:ख पडेंगे ऐसे कुकर्म करता। ये हँस–हँसकर हाथों से किये हुये कुकर्म वहाँ रोनेपर भी नहीं छुटते। यहाँ जो भी घड़ी घड़ी पलपल में किये हुये कुकर्मो का लेखाजोखा याने हिसाब चित्र–गुप्त के खाते में लिखा रहता। ।।१३।।

पूंतो धणी चोर पिस्तायो ।। माल बिराणा खावे ।।
तोडे शीश नाक कर काटे ।। भसमी खाल भरावे ।।१४।।

दुजे का माल हड्पने के लिये चोर चोरी करता। चोरी करते समय माल का मालिक किसी कारण वहाँ पहुँच जाता और चोर को पकड्ता। चोर पकड्ने पर पस्तावा करता,रोता फिर भी उसका सिर तोड्ते,नाक काटते,हाथ काट डालते,उसकी चमडी उतारकर उसमें भुसा

भरता यह दंड भोगना ही पड्ता। ।।१४।।

पातशां वाँ की हुरमां होती ।। लागी लार पिंजारा ।।
पडी पेजार पछे पछतानी ।। जलम गमायो जारा ।।१५।।

बादशाह की बेगम बादशाह को छोड्कर रुई धुननेवाले पिंजारी के मोह मे राजदरबार त्याग देती और पिंजारी के साथ पिंजारी के घर जाती। पिंजारी रुई धुनता और उस बेगम को भी रुई धुनने को लगाता। आराम मे रहनेवाले बेगम को रुई धुनने का काम जीवपर आता । वह काम टालने के लिये उस पिंजारी को अपने शरीर के उपर का गहना देती। ऐसा यह नित्य नियम से चलता परंतु कुछ समय के बाद बेगम के सारे गहने समाप्त हो जाते। रुई धुनने का काम पड़ा तो बेगम रुई धुनने को मना करती और क्रोधित पिंजारी को शांत करने के लिये अब शरीर पर गहने भी नहीं रहते इसकारण पिंजारी बेगम को जुतो से मारता। ये मार बेगम से सहे नहीं जाता तब पलपल बादशाह को याद करती परंतु अब बेगम को पछ्ताने के सिवा हाथ कुछ नही आता। इसीप्रकार जीव रामजी को छोड्कर स्वर्गादिक(ब्रम्हा,विष्णू,महादेव)तथा नरकादिक याने भेरु,पीर,दुर्गा,खेतपाल आदि देवतावो के पिछे लग गये तब जीवों के उपर नरकीय कर्मो का मार पड्ने लगा तथा चौरासी लाख योनी में दु:ख पड्ने लगे। जैसे बेगम ने बादशाह छोड्कर धुनीया से व्यभिचार करने मे जनम गवाँ दिया ऐसेही जीव अन्य होनकाली देवताओ के सुखों में रमकर मनुष्य देह गमा देते। ।।१५।।

आन जार कुं फिर फिर पूजे ।। हरसुं बेमुख होई ।।
गिणंका ज्युं जिण तिण की जोरूं ।। पतवरता नही कोई।।१६।।

जीव रामजी को छोड्कर माया के सुख देनेवाले परंतु काल के मुख में ढकेलनेवाले देवताओं की उठ उठ पुजने लगते और रामजी से दुर हो जाते। जैसे वेश्या एक पती की न बनते अनेक पुरुषों की जोरु बनती। ऐसे अनेक पुरुषों की जोरु बननेवाले वेश्या को कोई भी पतीव्रता नहीं कहता और उसके अंतीम समय उसे पती न होने के कारण सुख के सतवाड के देश नहीं जाते आता। इसीप्रकार जीव रामजी को त्यागकर काल के मुख में रखनेवाले देवताओं की भक्ति करने से महासुख के परमपद नहीं जाते आता। तीन लोक में काल के महादु:ख भोगते रहना पड्ता। ।।१६।।

बिणज ठग्यो बाण्यो पिस्तायो ।। नर तन नांव बिसाऱ्यो ।।
कह नही सके मन ही मन छीजे ।। साजी सोदे हाऱ्यो ।।१७।।

व्यापार करने मे बनीया याने साहुकार ठगे जाता। तोटा लगने के कारण वह बनीया याने साहुकार मन ही के मन में पछ्ताते रहता और दु:खी बने रहता और तोटा लगा यह दु:ख किसीसे बाटकर भी कम नहीं कर सकता। इसीप्रकार जीव नर तन में नाम लेना भूल जाने के कारण चौरासी लाख योनी में दु:ख भोगता और दु:ख हरण करनेवाला नाम लेना

भूल गया इसलिए पछ्ताते रहता ।।।१७।।

मृघ जळ धाय मृघो पिस्तायो ।। सेंबळ सेवर जुवा ।।
कांच महल कूकर पिस्तायो ।। युंई भुक भुक मुवा ।।१८।।

प्यासा मृग तपे हुए रेतीले जमीन पर प्यास बुझाने के लिए पानी खोजता। उसे जमीन पर जहाँ खडा है वहाँ से कुछ अंतर पर जमीन जमीन नहीं दिखती उस जमीन के जगह पानी ही पानी दिखता। वह पानी,पानी नही,यह वह मृग नहीं समजता और यह न समजने के कारण और प्यास बुझाने की जरुरत होने के कारण और वह अपनी प्यास बुझाने के लिए पानी के समान दिखनेवाली भाँप को असली पानी समजकर नजदिक पहुँचने के लिए दौड्ता। जैसे जैसे दौड्ता वैसे वैसे उसे दिखनेवाला पानी जहाँसे दौड रहा है वहाँ से उतने ही अंतर पर दिखते रहता। वह पानी असली पानी न होने के कारण अंतीम तक उसकी प्यास बुझती नहीं और दौड दौड के थक जाता,जरासा भी चलने का बल बाकी नहीं रहता,अंतीम मे बल थकने के बाद जमीन पर गिर जाता,झुठे पानी को असली पानी समजा इसलिए पस्ताता और मर जाता। इसीप्रकार नर–नारी अन्य देवताओं के भक्ति से मृगजल के समान सुख मिलेगे ऐसा मान लेते परंतु अंत समय मे ये देवता काल के चपेट से तो मुक्त नहीं करा सके उलटा ८४ लाख योनी के दु:ख मे गिर गये यह देखकर पस्ताते और दु:ख पाते।

ऐसेही सेंबल का पेड रहता उसे लाल लाल,बडे बडे फुल लगते। वह देखकर तोता पेड के फुल इतने अच्छे है तो फल भी बहोत अच्छे लगेंगे ऐसा सोचकर उन फुलो के पास फलों का इंतजार करते बैठ जाता। आगे चलके फुलो से आम सरीखे सुंदर फल लगते। कच्चे फल पकेंगे और खाने का आनंद लेयेंगा ऐसा मन मे सोचकर और भी इंतजार करता। फल पकते और फुटते। उसमे से खाकर आनंद देनेवाला रस नहीं निकलता उलटा उड्नेवाली रुई निकलती। इतने दिन भूखा प्यासा फल के आशा मे बैठा हुवा तोता दु:खी हो जाता और मन ही मन पछ्ताता। ऐसेही सभी नर–नारीयाँ अन्य देवताओं के भक्तियों से तृप्त सुख मिलेंगे यह आशा लगाते और वह आशा पूर्ण नहीं होती उलटे काल के दु:ख पड्ते तब दु:खी हो जाते और पछ्ताते।

जैसे शिशे के महल में कुत्ता घुस जाता। महल मे घुसने पे उसे महल मे उसीके समान शिशे में अनेक कुत्ते दिखने लग जाते। कुत्ते का स्वभाव कुत्ते के सामने कुत्ता दिखा तो भौंकने का रहता। कुत्ता यह नहीं समजता की वह जहाँ घुसा है वह शिशे का महल है और शिशे का यह गुण है कि शिशे के सामने जो आयेगा वैसाही उस शिशे से दिखेगा। इसलिए उसे महल मे घुसते ही उसके सामने चारो ओर कुत्ते दिखने लगते। शिशे के कुत्तो को देखकर घुसा हुआ कुत्ता भौंकता। जैसे वह कुत्ता जितने ताकद से भौंकता वैसे ही शिशेमें से दिखनेवाले सभी कुत्ते उसे भौंकते दिखते। भौंकते–भौंकते थक

जाता,बलहिन हो जाता और अंतीम मे जमीन पे गिरता और मर जाता। इसीप्रकार माया के वेद व्याकरण,शास्त्र,देवी–देवता के भक्ति मे नर–नारी परमात्मा खोजते,अंतसमय आ जाता,मर जाते परंतु सुख देनेवाला परमात्मा नहीं मिलता इसलिए पछ्ताते। ।।१८।।

गागर फोड चली घर रीती ।। पिस्तावे पिण हारी ।।
खोयो द्रब जलम युं हाऱ्यो ।। ज्युं जुवा खेल जुवारी ।।१९।।

एक स्त्री ने नेवला पाला रहता। उसे एक छोटा बच्चा रहता। वह स्त्री पानी लाने के लिए घर से दूर कुएँ पर नित्य जाते रहती थी। पानी लाने जाती तब अपने बालक को पालने में सुलाती थी और बालक की रक्षा करने के लिए नेवले को बैठा देती थी। नेवला बच्चे की रखवाली भी करता था और जब बच्चा उठता और रोता था तब उसके पालने की डोरी खिंचकर उसे खेलाता था और सुलाता था। एक दिन निसदिन अनुसार बच्चे को सुलाकर और उस नेवले को उसके पास बैठाकर पानी लाने को जाती। उसके चले जाने के बाद एक असली भयंकर नाग बचे के पालने में घुसने लगता। नेवला बालक की रक्षा के लिए उस नाग से लढता,उस नाग के टुकडे टुकडे कर मारता और बच्चे को जरासा भी धक्का न लगने देते बचाता। इस बचाने के खुशी मे वह नेवला बच्चे के माँ को बच्चे को जरासा भी धोका नहीं हुआ यह बताने बच्चे की माँ आनेवाले रास्ते पर बैठ जाता। कुछ समय के बाद पानी की गागर लेकर बच्चे की माँ लौटती। बच्चे के माँ को नेवला खुन से लथा पथा दिखता। बच्चे की माँ बच्चेके मोहके वश होनेके कारण यह सोच लेती की नेवले ने मेरे बचे को मार डाला,इसलिए वह खुनसे लथ पथ हुआ। आगे पिछे का कोई बिचार न करते पानी से भरी हुई गागर नेवले पर जोरसे पटक देती जिसमे नेवला जगह पर ही मर जाता और पानी से भरी हुई गागर भी फुट जाती। घर में रोते–रोते घुसती तो आगे बालक मस्ती मे खेलते दिखता और टुकडे टुकडे हुआवा नाग मरावा पडा दिखता। जिस नेवले ने अपनी पुरी ताकद लगाकर बच्चे को बचाया और उसेही बिना बिचार से मैंने मार डाला इसलिए पछ्ताने लगती। इसीप्रकार जगत के नर–नारी कालसे मुक्त करनेवाले संतो को कोसते,दु:ख देते भारी निंदा करते,यहाँ तक की किसी किसी संत को जान से भी मारने तक उठ जाते परंतु वे ही नर–नारी अंत समय पे नरक में डालनेवाले काल के क्रोधित दूत देखकर भयंकर घबराते और कालसे बचानेवाले संत को दु:ख दिया,कोसा, निंदा की,जान से मारा और उनका नहीं माना इसलिए पछ्ताते। जुआरी जुवा खेलता। जुवे में हारता। घर का धन,पत्नी,पुत्र,डाव पे लगाता और अंतीम मे धन,पत्नी,पुत्र गमा देता। इसप्रकार सभी गरजवाली वस्तुये हाथसे निकल जाती। सभी वस्तुये निकल जाने पर पलपल पस्ताता इसीप्रकार नर–नारी ८४ लाख योनी के जुलूम सहसहकर मिला हुआ अमोलक मनुष्य देह वेद,व्याकरण,शास्त्र,पुराण और रामजी छोड्के अन्य देवी देवता मे व्यतीत करते फिर भी ८४ लाख योनी से मुक्ति नहीं होती इसलिए पछ्ताते। ।।१९।।

पर मुलक पंथी पिस्तायो || मेरो मिंत न कोई||
दूर दिसतंर ओघट घाटा || संग वि अेक न दोई ||२०||

जैसे परदेस मे जाकर मुसाफिर अपना मित्र,हितैषी कोई न नजर आने के कारण पछ्ताता। अब लौटकर अपने देश जाये तो रास्ते में बडे–बडे पहाड्याँ,बडे–बडे जानलेवा जानवर,बडे बडे सागर सामने नजर आते और साथ मे ही एखाद से दुसरा कोई भी साथ देनेवाला नहीं है यह जानकर पछ्ताता। इसीप्रकार नर–नारी मनुष्य देह छुट जाने के बाद काल के देश मे अटकते,चौरासी लाख योनी में पड्ते और ऐसे महादु:ख के चौरासी लाख योनी से निकालने के लिए संत चाहकर भी मदत नहीं कर सकते और अकेले को ही चौरासी लाख योनी के सभी दु:ख भोगने पड्ते तब वह नर–नारी मनुष्य देह कर्मो मे,भोगो मे रामजी छोड्कर अन्य देवताओ की भक्ति करने मे गमाया करके पछ्ताते। ||२०||

ठगा ठग्यो मुसाफिर रूनो || द्रब संच्यो म्हे खोयो ||
झूट कपट कुमता ठग लीनो || काम बिषे रस बोयो ||२१||

मुसाफिर उम्रभर द्रव्य संचय करता और मुसाफिरी मे निकलता। उस मुसाफिरी मे उसका जनमभर संचित किया हुआ धन ठग ठग लेते है। ठगे जाने पर याने धन गवा देनेपर मुसाफिर मायुस होता है,रौंदता है,दु:खी होता है। इसीप्रकार जीव को झूठ याने कुटूंब परीवार,धन,राज के मोह ममता ने कपट याने गर्भ में करार किया उस रामजी को छोड्कर अन्य देवताओं की भक्तीयों ने कुमता याने नर्क मे डालनेवाली निच से निच कर्म करनेवाली मती ने काल के मुख में डालनेवाला काम तथा पाँचो विषय वासनाओ ने ऐसे न्यारे न्यारे प्रकार के ठगो ने मुश्किल से पाये हुये मनुष्य तनरुपी धन को ठग लिया है और मनुष्यरुपी धन के उपर मोक्षरुपी धन कमाने का अवसर हाथ से निकल गया है और उपर से ८४ लाख योनी के दु:खों को फंद गले मे गिर गया है इसलिए जीव पछ्तावा करता है। ||२१||

सत्तगुरू शब्द दियो नही शिंवच्यो || गाफल जलम गमायो ||
झुठी गल्ला गाँव में राळी || खेत चिड़ कल्या खायो ||२२||

जैसे किसान ने खेत बो दिया और उसकी फसल भी अच्छी आ गयी परंतु रखवाली न करके गप्पे मारते बैठे रहा,उस झूठी गप्पा मारने में,गाँव में घुमने मे जैसे खेत चिडीयोने खा डाला ऐसेही मनुष्य देह अवतार मिला ८४ लाख योनी का फंद काट देनेवाले सतगुरु मिले,सतगुरुसे महासुख के मोक्षपद मे पहुँचानेवाला शब्द मिला ऐसे सभी योग जुट जाने के बाद भी नाम का सुमिरन नहीं किया,उस शब्द के सुमिरन मे गाफिल रहकर अमोलक मनुष्य देह विषय वासनाओ के विकारो मे तथा त्रिगुणी माया के करणीयों में गवा दिया। ||२२||

म्रत लोक मानव पिस्ताया || देव लोक मे देवा ||

भक्तहीण सबी पिस्तासी ।। बिसऱ्या हर की सेवा ।।२३।।

जो मनुष्य देह मे हर की भक्ति करना भूल गए ऐसे सभी भक्तिहिन मनुष्य तथा देवलोक के सभी देवता काल का फंद गले मे पड़ने पे पछ्ताते। ।।२३।।

ध्यान समाध समे कोई साधु ।। देव लोक मे जावे ।।
जिन कुं देख करे अब लाखा ।। भक्त काज पिस्तावे ।।२४।।

हर का ध्यान करनेवाले हर साधू का पिंड खंड और ब्रम्हड बनता। वह साधू बंकनाल से जिस रास्ते से ब्रम्हांड में चढता उस रास्ते मे उसे स्वर्गलोक लगता। स्वर्गलोक मे साधू को सुदर्मा सेज मे बैठे देखकर साधू जो हर की भक्ति कर रहे वह हमने मनुष्य तन मिला तब नहीं किया इसका पछ्तावा करते और साधू को काल से छुटते देखकर सभी देवता मनुष्य तन की अभिलाषा करते। ।।२४।।

इन्द्र लोक में सेज सुदर्मा ।। वां जन बेसे जाई ।।
देव प्रष्ण करे मिल बुजे ।। देव ई उतर लाई ।।२५।।

साधू जिस सुदर्मा सेज मे हर का ध्यान लगाकर बैठे है वह सुदर्मा सेज इंद्रलोक में है। उस साधू को सुदर्मा सेज में बैठा हआ देखकर वहाँ के देवता आपस मे ज्ञानी देवताओ को कुछ प्रश्न करते है और वे ज्ञानी देवता आपस मे ही उन प्रश्नो का उत्तर भी देते है। ।।२५।।

लोकां में को लोक बडो हे ।। देही मे को देहा ।।
नांवा मे को नाम बडो हे ।। सेवा मे को सेवा ।।२६।।

देवता आपस के ज्ञानी देवताओ को प्रश्न करते है कि,लोको में बड़ा लोक कौनसा है? देही मे बडी देह कौनसी है?नामा मे काल छुड़ानेवाला नाम कौनसा है?तथा सेवा मे याने भक्ति में श्रेष्ठ भक्ति कौनसी है?।।२६।।

लोकां मे मृत लोक बड़ो हे ।। देही मे नर देहा ।।
नांवा मे बड़ो राम नाम हे ।। सेवा मे सन्त सेवा ।।२७।।

ज्ञानी देवता अन्य देवताओ को लोको मे मृत्युलोक बड़ा है,देही मे मनुष्य देह बड़ा है,नामो में रामनाम बड़ा है तथा सेवा मे संत सेवा बडी है ऐसा जबाब देते है। ।।२७।।

नांव बिना जन मोख न पोंते ।। नांव संचे नर देही ।।
मृत लोक बिन साध न निपजे ।। कीजो राम स्नेही होई ।।२८।।

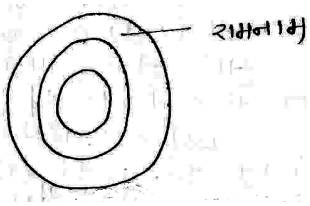

ज्ञानी देवता अन्य देवताओ को ज्ञान से समजाते है कि जगत मे अनेक नाम है उन सभी नामो से हंस मोक्ष में नहीं पहुँचता। हंस मोक्षमे सिर्फ रामनामसे ही पहुँचता। इसलिए अनेक नामो में रामनाम ही बड़ा है। इसीप्रकार जगत मे बैकुंठ,कैलास,सतलोक,स्वर्ग की चार पुरीया,२१स्वर्ग,१३पाताल,८४ लाख प्रकार के देह ऐसे अनेक देह है परंतु मनुष्य देह

छोड्कर स्वर्गादिक,नरकादिक तथा चौरासी लाख के किसी भी योनी मे मोक्ष मे ले जानेवाले नाम का संचय नहीं होता। इसलिए सभी देहो मे मनुष्य देह बडा है। जगत मे मृत्युलोक,पाताललोक,स्वर्गलोक,बैकुंठ,कैलास,सतलोक,शक्तिलोक,३ ब्रम्ह के १३ लोक ऐसे अनेक लोक है। इन सभी लोको में मृत्युलोक बडा है। इस मृत्युलोक के सिवाय अन्य किसी भी लोकमे मोक्ष देनेवाले साधू नहीं निपजते। साधू सिर्फ मृत्युलोक में ही निपजते। ऐसे सतस्वरुप साधू की सेवा याने संगत करने पर ही राम से स्नेह याने प्रेमभाव होता और घट में राम प्रगटता। सतस्वरुपी साधू छोड्कर मायावी साधू संतो की सेवा याने संगत करने पर,ब्रम्हा,विष्णू,महादेव,शक्ति,अवतारो के मूर्तीयों की या वेदो की क्रिया करणीयाँ करने से घट में काल से मुक्त करानेवाला राम नहीं प्रगटता। ।।२८।।

आ कारणीक देह सुख दु:ख भोगे ।। शिवरण पडे न संचे ।।
वा कारजीक देह करे सो होवे ।। युं नर तन सुर बंचे ।।२९।।

ज्ञानी देवता प्रश्नकर्ते देवताओ को समजाते की हमारा देह यह कारणीक देह है,तेजपुंज का देह है,यह स्वर्ग के सुख-दु:ख भोगने का देह है। इस देह से रामजी का सुमिरन होता है परंतु कितना भी स्मरन किया तो भी घट मे एक शब्द भी संचित नहीं होता जैसा हमारा देह है वैसा मृत्युलोक के मनुष्यों का भी देह है। वह कारजीक देह है,वह मलमुत्र का देह है, उस देहसे जो संचित करना चाहो वह संचित हो जाता मतलब मनुष्य देह मे रामनाम सुमिरन करने पर रामनाम संचित हो जाता और ऐसे संचित होनेके गुणसे कालसे मुक्त करानेवाला राम घट में प्रगट हो जाता। इस गुण के कारण ये सभी देवी देवता मनुष्य तन की चाहना करते। ।।२९।।

मनछया भोग सरब सुख हाजर ।। सेज सुदर्मा मांही ।।
आवा गवण मिटे नही हंस की ।। ओ सुख थिरता नाही ।।३०।।

इस अपने देवो के सुदर्मा सेज मे जो जो मन से भोग याने सुख चाहते हो वे सभी भोग याने सुख तुरंत हाजिर हो जाते परंतु अपना चौरासी लाख मे आने जाने का फेरा नहीं मिटता। इसलिए सुदर्मा सेज पकड्कर स्वर्ग के सभी सुख हमे सदा रहनेवाले सुख नहीं रहते। स्वर्गादिक छुट्कर चौरासी लाख योनी मे पडने के बाद समाप्त होनेवाले रहते। ।३०।

पोंते जुरा काळ नित्त झांपे ।। जब ही सुखरत खूटे ।।
बारम्बार पड़े चोरांसी ।। जम की मार न छुटे ।।३१।।

हमने मनुष्य देह से कमाकर लाए हुए सुकृत खुटते ही बुढापा व्यापता और पूर्ण सुकृत खुटने पे काल आकर हमे झपटता और यह काल हमे चौरासी लाख प्रकार के अलग अलग योनी मे डालकर न सहनेवाला मार देता। यह मार हमारी नहीं छुटती। ।।३१।।

आवा गवण जलम ओर मरणा ।। भक्ति बिना दु:ख भारी ।।
माया मोह बिषे सुख मांही ।। साची सूंज बिसारी ।।३२।।

रामजी के भक्ति बिना आवागमन का याने चौरासी लाख बार जन्मने का और मरने का दुख बहोत भारी है। हम जब मनुष्य देह में थे तब माया मोह मे और विषय वासना वो के सुखों में लिन हो गये थे और रामनाम के सुमिरन की सच्ची समज भुल गये थे। ।।३२।।

मृत लोक हुँता नर देही ।। राम नाम नही संच्यो ।।
जप तप जिग किया ब्रतादिक ।। सुरग लोक सुख बंछयो ।।३३।।

हम भी मृत्युलोक में मनुष्य शरीर में थे उस समय हमने रामनाम का संचय नही किया। अमरलोक के सुखों की चाहना नहीं की। जप,तप,यज्ञ,व्रत आदि करके स्वर्ग प्राप्ती की चाहना की और अब स्वर्ग में आकर बुरी तरह अटक गये। ।।३३।।

सांकळ जड़यो सिंघ पिस्तावे ।। अब कोहो कुंण छुडावे ।।
पाप पुन्न कंचन लोहो बेड़ी ।। पांव पडे दुख पावे ।।३४।।

अपनी सांकल मे बांधे हुए सिंह के जैसी गती हुई है। जगत मे सांकल लोहे की तथा कंचन की रहती। पाप कर्म करनेवाले नरक मे पड्ते और दु:ख भोगते और जप,तप,यज्ञ ऐसे उंच कर्म करनेवाले स्वर्ग मे पहुँचते और स्वर्ग के सुख दु:ख भोगते। सिंह के पैरो मे लोहे की बेडी पडी या सोने की बेडी पडी दोनो बेडीयो से सिंह पे दु:ख ही पड्ते। इसीप्रकार हमे पुण्यरुपी कंचन बेडी लगी है। जैसे सिंह को कंचन के बेडी से लोहे के बेडी इतनाही दु:ख होता वैसे हमे नरक में पडे हुए जिवों के समान ही आवागमन का काल का दु:ख रहता। सोने की बेडी जैसे दिखने को लोहे से अच्छी रहती परंतु सिंह को दु:ख देने मे सरीखी ही रहती वैसेही स्वर्ग,नरक से अच्छा दिखता परंतु चौरासी लाख योनी के दु:ख भोगने के लिए सरीखा ही रहता। जैसे सिंह के पैरो मे लगी हुई बेडी चाहिये वह लोहे की रहो या सोने की कोई छुडा नही सकता ऐसी ही हमारी आवागमन की बेडी स्वर्ग को देखकर कितनी भी सुहावनी लगी तो भी कोई छुडा नहीं सकता। ।।३४।।

काया कळस बिषे रस भरीयो ।। कहो किसी बिध छुटे ।।
खान पान मर्कट की मुठी ।। काळ कुंजडो कुटे ।।३५।।

इस हमारे पुण्य कर्मो से हमे देव लोक मिला है। यह देवलोक से चौरासी लाख योनी में भोग मे न जाते सिधा मनुष्यदेह मे आने की रीत नहीं है। वह देवलोक देवलोक के सुख भोगकर चौरासी लाख योनी भोगने को बंधनकारक है। इस देवलोक का हमारा देह विषय रसो से भरा हुवा घडा है। हमारा शरीर यहाँ खाने के,पिने के,अप्सराओ से भोग करने के, गाने सुनने के,अमृतसरीखे स्वादिष्ट पदार्थ पिने के,उत्तम तरह की सुगंधी लेने के विषयो के सुख भोग लेने के आवश्यकता से ओतप्रोत भरा है। अगर ये सुख यहाँ नहीं लिए तो यह हमारा देह मरे सरीखा यातना भोगता मतलब यह देह यहाँ के सुख लेने के लिए बेचेन रहता। हमसे यहाँ के सुख बंदर के मुठ्ठी समान छोडे नहीं जाते। जैसे बंदर को पकड्ने के लिए छोटे मुख के घडे में फुटाणे,दानेसरीखी वस्तू रख देते। उसमे हाथ से निकाल

निकालकर बंदर खाते रहता। बार-बार घडे में मुठ्ठी डालते रहता और निकाल के खाते रहता। धिरे-धिरे मुठ्ठी मे पहले से अधिक वस्तू पकडते रहता। मुठ्ठी में अधिक वस्तू पकडते-पकडते मुठ्ठी घडे के मुख से बाहर नहीं निकल सकती इतनी मुठ्ठी मे पकडे हुए वस्तू से बडी हो जाती। इधर वस्तू से भरी हुई मुठ्ठी बाहर नही निकलती और मुठ्ठी छोडकर खाली हाथ बाहर निकाला तो वह वस्तू घडे में गिर जाती। इसलिये मुठ्ठी से वस्तू भी छोडने की इच्छा जरासी भी नहीं होती। इसीप्रकार हमारे लिए देवलोकोके विषय वासनाओ के सुख है। ये सुख त्यागने की जरासी भी इच्छा नहीं रहती। जैसे घडे में मुठ्ठी अटके हुये बंदर पकडनेवाला मदारी पकड ले जाता वैसेही हमे भी यह काल पकडकर चौरासी लाख योनी के दु:खों में डालता। ।।३५।।

युं सब देव करे पिस्तावो ।। अब नर तन कद पावां ।।
जामण मरण काळ भे मेटर ।। प्रमधाम कब जावां ।।३६।।

इसतरह यहाँ सुदर्मा सेजपर बैठे हुए सभी देवता पस्तावा करते है और मनुष्य देह कब मिलेगा?कब जन्मना,मरना और काल का भय मिटेगा?तथा परमधाम कब जायेंगे? इसकी चिंता करते। ।।३६।।

अहो प्रभू मानव तन दिजे ।। भरत खंड के माही ।।
केवळ भक्त करा संत सेवा ।। ओर करां कुछ नाही ।।३७।।

इस चिंता से वे सभी देव भरत खंड मे मनुष्य तन मिले इसलिए प्रभू से प्रार्थना करते और प्रभू से कहते है कि,मनुष्य तन मिलने पे कैवल्य प्राप्त कर देनेवाले संतों की सेवा करेंगे, संगत करेंगे और कैवल्य प्राप्त करेंगे। कैवल्य के सिवा जप,तप,सत,यज्ञ,व्रतादिक यह कुछ भी नहीं करेंगे। ।।३७।।

ब्रम्हा देव बिसन सिव देवा ।। इन्द्र देव पिस्तावे ।।
धिन धिन सन्त भक्त कर केवळ ।। प्रमधाम कुं जावे ।।३८।।

ब्रम्हा,विष्णू,महादेव,शक्ति,इंद्र तथा सभी देवी-देवता कैवल्य की भक्ति करके परमधाम जानेवाले संतो को देखकर धन्य है ये संत,धन्य है ये संत यह निजमन से ज्ञानदृष्टीसे कहते। ।।३८।।

जामण मरण जीत मोहो माया ।। जुवा काळ भे नाही ।।
अमर लोक मे आज पहुँता ।। जीत निसाण बजाई ।।३९।।

इन संतो ने मोहमाया जीत ली,जन्म-मरन का फेरा काट लिया,बुढापे का तथा काल का भय मिटा दिया और होनकाल को जितकर आज अमरलोक में पहुँच गये इसप्रकार काल को तथा मोहमाया को जित लिया यह निशाण जगत मे बजा दिया। ।।३९।।

अमर लोक मे बटे बधाई ।। सन्त सामा चल आवे ।।
देव लोक मे जे जे बाणी ।। पेप फूल बर सावे ।।४०।।

संत मृत्यूलोकसे मोहमाया और काल को जितकर अमरलोक पहूँच रहे यह समाचार अमरलोक मे पहूँचते ही अमरलोकके सभी संत अमरलोक मे आपस मे बधाईयाँ बाँट रहे है। संत ने काल को जिता इस आनंद से वहाँ के संत उत्सव मना रहे तथा नये आनेवाले संत का आनंद के साथ स्वागत करके अमरधाम मे लाने के लिये सभी संत सामने अगवानी के लिये आ रहे है। अमरलोक जाते समय रास्ते मे देवलोक लगता। उस देवलोक में अमरलोक जानेवाले संत का सभी देवता जय जयकार कर रहे और संतो के उपर फूल बरसा रहे। ।।४०।।

जम देव सुंपे कोटवाळी ।। रिध भंडार कुबेरा ।।
इन्द्र कहे मे दास तुमारा ।। लेवो सिंघासण मेरा ।।४१।।

अमरलोक जानेवाले संत से यमदेव अपनी कोतवाली लेने को प्रार्थना करता और अपने यमलोक मे यमलोक का मालिक बनकर यमलोक मे ही रहने को कहता। इसीप्रकार कुबेर अपना रिद्धी का भंडार संतो के चरणो मे डालकर रिद्धी से सभी तरहके आनंद लेने को कहता और यही रहने को कहता,परंतु ये संत यम की और कुबेर की एक बात न मानते इंद्रलोक मे जाते। इंद्र भी अपना इंद्र सिंघासन ग्रहण करने को कहता और ३३ करोड देवताओ के साथ आपका दास बनकर रहूँगा करके प्रार्थना करता। ।।४१।।

ब्रम्हा कहे घड़ो तुम भंजो ।। शिव कहे करो संघारा ।।
बिसन कहे किजे प्रतपाळा ।। ओ बेकुंठ तुमारा ।।४२।।

संत इंद्र के देश न रुकते ब्रम्हा के लोक जाते। ब्रम्हा भी संत को सतलोक ही रहो और सृष्टी का घडभंजन करो यह संत से प्रार्थना करता परंतु संत ब्रम्हा की बात न मानते आगे कैलास रवाना होते। कैलास में कैलास का मालिक शंकर संत को अपना संहार करने का ओहदा धारन कर कैलासमे ही रुकने को विनंती करता। संत कैलास मे भी न रुकते बैकुंठ में पधारते। बैकुंठ में विष्णु संतका स्वागत करता और संत को सारे सृष्टी का पालन करने का औदा ग्रहण करने को कहता परंतु संत बैकुंठ मे विष्णु की जरासी भी न मानते आगे चलने को निकलते। ।।४२।।

चिदानंद कहे अंछया तेरी ।। आ रचना आप रचावो ।।
शिव ब्रम्कह हे श्रूप हमारो ।। ओ ने:चळ पद पावो ।।४३।।

संत आगे चिदानंद ब्रम्ह पहुँचते। चिदानंद ब्रम्ह भी अपनी रचना करनेकी इच्छा यह संत को सोपते और इच्छा को स्विकार कर रचना करने को कहते और यही मेरे पद मे रहने की प्रार्थना करते परंतु संत चिदानंद का न सुनते आगे शिवब्रम्ह के पद पहुँचते। शिवब्रम्ह भी संत को अपना निश्चल स्वरुप का पद ग्रहन करने की विनंती करते और निश्चल बनकर अपने शिवब्रम्ह पद मे रहने को कहते। ।।४३।।

वे निरब्रत पुरष पड़े क्यूं परब्रत ।। सरब पदार्थ त्यागी ।।

बंदगी तालब केवळ ग्यानी ।। वां री सुरत साहिब सुं लागी ।।४४।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,मोहमाया,काल,आवागमन के चक्करसे निवृत्त हुए वे पुरुष जिन माया के सुखों से आवागमनके चक्कर मे अटके रहते थे वैसे प्रवृत्त पसारे मे फिरसे नहीं पडना चाहते। वे बंदगी के तालब याने रामजी की सेवा मे लगे हुये कैवल्य ज्ञानी है। उनकी सुरत साहेब मे लगी है वे माया के सुखों में याने जिसमे काल है,आवागमन है ऐसे दृष्ट, परावृत्त चक्र मे फिरसे नही पडते। ।।४४।।

सुळज्या हंस जके क्युँ उळझे ।। देव सबे उळझावे ।।
तीन लोक का तजे पदारथ ।। चोथो लोक बसावे ।।४५।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,इन सभी माया मोह,आवागमन,बुढापा और काल के जालसे सुलझे हुए संत यम,कुबेर,ब्रम्हा,विष्णू,महादेव,चिदानंद ब्रम्ह,शिवब्रम्ह जो माया मोह,आवागमन,बुढापा और कालके जालमे बुरीतरह उलझे हुए है ऐसे जाल मे फिरसे क्यों उलझेगे?उन्होंने चौथे लोक के अदभूत सुख पाने के लिए तीन लोकके सभी सुख त्यागे है और अदभूत सुख लेने के लिए चौथे लोक मे बसने के लिए निकल गये है। ।।४५।।

ब्रम्हा बिस्न महेसर ईसर ।। सब युं करे उदासी ।।
ओ पर ब्रत पसारो छाड हुवां कद ।। निरब्रत देश का बासी ।।४६।।

ऐसे संतों का अदभूत सुखों के चौथे देश का पाने का देखकर ब्रम्हा,विष्णु,महादेव ये देवता उदासी करते है और काल के जबडे मे फंसा हुआ परावृत माया का पसारा त्यागकर माया के परे के निवृत्त देश में हम कब जायेंगे?इसका सोच करते है। ।।४६।।

तीन लोक की पास गळा मे ।। बंदगी बणे न काई ।।
उपजत खपत करो प्रत पाळा ।। आ बिपता ब्रम्ह लगाई ।।४७।।

ब्रम्हा,विष्णू,महादेव बिचार करते की तीन लोको की उत्पत्ती करना,प्रतिपाल करना और खपाना याने संहार करना यह फाँसी हमारे गले मे पडी है। इस विपत्ती के कारण रामजी की बंदगी याने भक्ति हमसे बनती नहीं। यह उत्पत्ती करना,प्रतिपाल करना,संहार करना इसमे अस्सल सुख है यह समजकर यह पद मनुष्य देह में जब हम थे तब हमने ही माया की भक्ति कर कर ब्रम्हसे माँगा है। अब चौथे पद जाने के लिये तीन लोक के ये पद हमारे लिए विपत्ती बन गये है ऐसा ब्रम्हा,विष्णु,महादेव फिकीर कर रहे है। ।।४७।।

तीन लोक का तीनुं मालक ।। से अटके नही कोई।।
पातस्याहा का अेदी आगे ।। भूपत हाजर होई ।।४८।।

ब्रम्हा,विष्णु,महादेव आपस मे कहते है कि,हम तीनो लोको के मालिक है फिर भी हमसे ये संत प्रार्थना करने पे भी रुके नहीं जा रहे थे और उन्हें जबरदस्ती से अटकाना चाहते थे तो भी वे अटकाये नही जा सकते। हमारी तीनो की स्थिती बादशाह के अेदी याने

प्रतिनिधी के सामने राजा जैसे दासभाव से हाजिर होता और गलती करने पर अेदी के हाथ का मार तक खाता वैसे संतों के सामने हमारी स्थिती बनी रहती। ।।४८।।

अगम देस का सतगुर अेदी ।। शब्दा मार मचावे ।।
सुता हैसा सुण सुण जागे ।। सो सतगुर पद पावे ।।४९।।

अगम देश के सतगुरु यह अेदी याने प्रतिनिधी है। वे अगम देशके शब्दों का मार जीवो के भ्रम मिटाने के लिए मचाते। माया मोह तथा भ्रम मे सोये हुए हंस सतगुरु का ज्ञान सुनसुनकर महासुख का ऐसा काल के परे का सतगुरु पद पाते। ।।४९।।

जाग्या हंस जके नही सोवे ।। सत्तगुर शब्द बिचारे ।।
अगम देस की अणभे वाणी ।। अनंत हैसा कूं तारे ।।५०।।

उन संतों का ज्ञान सुनसुन कर जागृत हुअेवे संत फिरसे सोते नहीं याने माया मोह मे पड्ते नहीं। वे संत माया मोह तथा भ्रम मारनेवाले सतगुरु शब्द का मनन करते। ऐसी यह अगम देश की काल के भय से मुक्त करानेवाली अणभै वाणी है। यह वाणी अनंत हंसो को भवसागर से तारती। ।।५०।।

अगम देस की अणभे अेसी ।। सुण तांई सुख आवे ।।
गरजे शब्द सुधारस बरसे ।। भरम करम सब ढावे ।।५१।।

उन संतों से अगमदेश की अणभै वाणी सुनते ही धारण करनेवाले को माया के ज्ञान और ध्यान से मिलनेवाले सुख से न्यारा सुख मिलता। उन संतों का शब्द संतके घट में गरजता है और अमृत के समान घट में बरसता है। उनके शब्द से सभी भ्रम और कर्म ढह जाते है। ।।५१।।

लगे समाध इकि सुं ब्रहमंड ।। अमर देश वे जाही ।।
के सुखराम जके जन जग मे ।। भूल न भव जल आही ।।५२।।

उन संत के शब्द से संत २१ ब्रम्हंड याने २१ स्वर्ग पार करते है और उनकी दसवेद्वार में समाधी लगती है। इसप्रकार संत अमरदेश में पहुँचता है। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,अमरलोक पहुँचे हुए संत भुलकर भी पुन: इस भवसागर में नहीं आते । ।।५२।।

अमर लोक का अमर प्रेस्ता ।। से हंस लेवण आवे ।।
म्रत लोक का सन्त प्रेस्ता ।। दे परमोद पठावे ।।५३।।

मृत्युलोक में अगमदेश का उपदेश देकर भ्रम कर्म काटने के लिए केवली संतरुप में फरीस्ते बन आते है। यह संत फरीस्ते हंस को घट में दसवेद्वार तक तथा दसवेद्वार के परेके अमरलोक में पहुँचाते है। ऐसे दसवेद्वार के परे पहुँचे हुए संतों को उनका अंतीम समय आने पर अमरलोक से अमर फरीस्ते अमरलोक ले जाने आते है और सदा के लिए अमरलोक ले जाते है। ।।५३।।

निकास का चवदा दरवाजा ।। हंस दसु दिस जाही ।।
सामा आंण बधावे साधू ।। आगम करे बधाही ।।५४।।

हंस के अंतीम समय पर देहसे निकलने के(कान दो,आँखे दो,नाकपुडी दो,मुख एक,स्तन दो,नाभी एक,लिंग दो,गुदा एक और दसवेद्वार ऐसे)चौदह दरवाजे है। जैसे कर्म और भक्ति करते वैसे जीव चौदह दरवाजो से अलग-अलग दिशा से निकलते। लिंग और गुदा इन निचे के दिशा से जाने वाले हंस नरक में पड्ते है। स्तन,आँखें,कर्ण(कान),नाक,मुख इन दिशा से जानेवाले हंस स्वर्गादिक जाते है तथा नाभी से जानेवाले हंस मृत्युलोक पहुँचते है । इसीप्रकार उपरांडे याने दसवेद्वार से जानेवाले हंस चौथे लोक याने अमरलोक जाते है। यहाँ से जानेवाले संतो का वहाँ के साधू आमने सामने आकर भारी आगत स्वागत करते है और मृत्युलोकसे निकले हुए संत अमरलोक पहुँचतेही स्वागत करने आये हुए सभी संत का अमरलोक पहुँचने का शुभ समाचार पूर्ण अमरलोक मे देते है और इस भारी शुभ घटना की बधाई भी अमरलोक के सभी संतो को देते है। ।।५४।।

ओर त्रपत समता भई पुरण ।। जन दरसण नित चावे ।।
सन मुख आण प्रेसतो बुजे ।। अजहुँ सन्त कोईआवे ।।५५।।

यहाँ से वहाँ पहुँचे हुए सभी संतों को यहाँ से जाने वाले नये संतों के दर्शन की नित्य चाहणा रहती है। वहाँ के संतों को बाकी कोई ममता नहीं रहती है मतलब बाकी सभी ममता वहाँ के संतों की तृप्त हुई रहती है। ऐसे वहाँ पहुँचनेवाले संत के सामने जाकर फरीस्ता तथा सभी संत तुम्हारे सरीखा काल को जितकर और भी कोई संत यहाँ आ रहा क्या?ऐसा अती आतुरता से पुछ्ते है। ।।५५।।

हरक कोड उछाव नवा नित्त ।। पल पल प्रित सवाई ।।
देख्या सन्त हियो युं हर्के ।। ज्युं रंक नव निध पाई ।।५६।।

यहाँ से अमरलोक जानेवाले संत को देखकर वहाँ के सभी संतों को हर्ष होता है और लाड आता है। वहाँ के संत यहाँसे पहुँचनेवाले संत के निमित्त से नित्य नित्य नये नये उत्सव करते है और पहुँचे हुए संतो से वहाँ के संत हर नये पल सवाई प्रिती करते है। यहाँ से पहुँचे हुए संत को देखकर वहाँ के संतो का हृदय जैसे मृत्युलोक मे रंक याने दरीद्री मनुष्य को नवनिधी मिलने पर हर्ष होता है ऐसा हर्ष होता है। ।।५६।।

अमर लोक मे सन्त बिराजे ।। ज्यारां सुख बताऊँ ।।
गुप्ता भेद बेद नही जाणे ।। सो प्रगट कहे गाऊँ ।।५७।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,यहाँ से अमरलोक में पहुँचे हुए संतों का सुख मैं तुम्हें बताता हूँ। ये अदभूत सुख भेद याने शंकर और वेद याने ब्रम्हा को नेकभर भी मालूम नहीं है ऐसे गुप्त है वे सभी गुप्त सुख मैं आप सभी को प्रगटकर बताता हूँ। ।।५७।।

अमर लोक मे ओ गुण पड़ीयो ।। थिरे राज कहुँ तोई ।।
जुरा काळ जंवरो नही पुंते ।। जलम मरण नहीं दोई ।।५८।।

अमरलोक में बुढापा,काल तथा जन्मना मरना नहीं है इसलिए यहाँ से पहुँचनेवाले संत ने बुढापा न आना,काल ने नहीं खाना,जन्मने मरने मे नहीं आना यह कुद्रती गुण प्रगट जाता । इसकारण वहाँ पहुँचा हुआ संत स्थिर याने अमर रहता और सभी अमर सुखों का राजा बनके राज भोगता। ।।५८।।

मेहर वान सब ही बड़ पुरषा ।। गेब छत्तर शिर छाया ।।
केर कुमेर नहीं मे मेरी ।। काम क्रोध मोहो माया ।।५९।।

वहाँ पहुँचे हुए सभी संत अदभूत सुखों की मेहेर हुअेवे महापुरुष है। उन संतो के सिर पे कुद्रती किसीको न समजनेवाली रामजी की छत्रछाया है। वहाँ सुख मिलने की कोई भी कसर नहीं रहती। वहाँ किसीकी कुमेर भी नहीं रहती और वहाँ पर मैं मेरा यह भाव भी नहीं रहता। वहाँ पे यहाँ के सरीखा काम,क्रोध,मोह माया नहीं रहती। ।।५९।।

अेक ई रूप तेज तप अेकी ।। बड़ा पुरष बड भागी ।।
आप उजाळा आपही सुझे ।। अखन्ड झिगा मिग लागी ।।६०।।

वहाँ रहनेवाले सभी एक जैसे तेज तपके है। वहाँ रहनेवाले सभी महापुरुष और सभी भाग्यवान है। उनके देह से ही निकलनेवाले प्रकाश से वे दिखाई देते है। वहाँ पहुँचे हुए संतों के प्रकाश की अखंड झगमगाहट लगी है। ।।६०।।

मिन्दर झिगा मिग रतना छाया ।। बाग झिगा मिग फूले ।।
सन्त झिगा मिग द्रब सरीरा ।। कोटक सुरज भूले ।।६१।।

रत्नोसे छाये हुए मंदिर के झगमगाटसे मंदिर झिगमिग करता,फूलो के झगमगाट से बाग फूला फूला दिखता वैसे संतों के दिव्य शरीर से निकलनेवाले करोडो सूर्यो के प्रकाश से संतों का दिव्य शरीर झिगमगाट करता। ।।६१।।

दीप झिगा मिग दिपक सूजे ।। हिर झिगा मिग हीरा ।।
शब्द झिगा मिग सब जग सूजे ।। सोजे सकळ सरीरा ।।६२।।

जैसे दिपक के झगमगाट से दिपक मालूम पड्ता है,हिरे के झगमगाट से हिरा मालूम पड्ता है वैसे सतशब्द के झगमगाटसे शरीर में ही ब्रम्ह सुजता और शरीर खोजने पे सभी जगत शरीर में दिखता। ।।६२।।

सुरज झिगा मिग सुरज देखे ।। चन्द झिगा मिग चन्दा ।।
ब्रम्ह झिगा मिग ब्रम्ह देख्या ।। सो साहेब का बंदा ।।६३।।

जैसे सुरज के झिगमिगाट से सूर्य दिखाई देता है। चंद्रमा के झिलमिलाट से चंद्रमा दिखाई देता है वैसेही ब्रम्ह शब्द के झिगमिगाट से ब्रम्ह दिखता है ऐसा ब्रम्ह जो देखता है वह साहेब का बंदा है। ।।६३।।

मिणीया जोत रतन प्रकासा ।। माळ मोतीया पोई ।।
आणंद कळस अमीरस भरीया ।। सुख का सागर सोई ।।६४।।

साहेब के देश मे मणीयो के,ज्योती के,रत्नो के,मालावो में पोये हुए मोतीयो का प्रकाश संत को आनंद देते। वहाँ आनंद देनेवाले अमृत से भरे हुए कलस है ऐसा साहेब का देश आनंद का सागर है। ।।६४।।

किस्तुरी कुंजा भर राख्या ।। परमल अेक सरीसी आवे ।।
युं सब को सुख एक सरीखो ।। सब हाजर हो जावे ।।६५।।

जैसे कस्तुरी से भरे हुए कुंजे के पास बैठने से बैठनेवाले सभी को एकसरीखा सुगंध का आनंद मिलता वैसेही साहेब के देश में सभी संतों के सामने सभी सुख हाजिर हो जाते और सभी संत एकसरीखे तृप्त सुख लेते। ।।६५।।

वो सुख को सागर सब सुख त्रपत ।। चितवन करे न कोई।।
अनन्त सरोवर अनंताई हंसा ।। केळ करे कहुँ तोई ।।६६।।

साहेब का देश तृप्त सुखो का सरोवर है। उन सुखों के लिए कोई भी संत चितवन याने चित मे बिचार नही करता फिर भी सभी तृप्त सुख संतों के सामने हाजिर हो जाते। ऐसे अनंत सुखों के सरोवर पे अनंत ही हंस अलग अलग सुख लेने की क्रिडा,खेल,लिला करते और तृप्त सुख लेते। ।।६६।।

शिर पर मोड सुजस का बंधीया ।। युं हुवे अमर आवाजा ।।
अणंद बधावा नित ही वाजे ।। कहे धिन धिन महाराजा ।।६७।।

जैसे यहाँ खेल मे कोई जितते है उन्हें जीत का मोल याने पदक बांधे जाता है वैसेही वहाँ के संतों के शिरपर मोह माया,काल और आवागमन के चक्कर को जितकर सुखों का सरोवर पाने का सुयश का अमर पदक बांधा जाता है। वहाँ संतों के मोह माया,काल तथा आवागमन के चक्कर के जीत के अमर नारो के आवाज होते है। वहाँ जीत के प्रित्यर्थ आनंद के बधावे याने जस के शब्द नित्य सुनाई देते है और वहाँ सभी संतो को धन्य है, धन्य है महाराज ऐसे अमर शब्द के आवाज सुनाई देते है। ।।६७।।

अमीरस कुंपा करे सिनाना ।। बस्तर अमर सरीरा ।।
हसता मुख मे मोती बरसे ।। पाव धरे जां हिरा ।।६८।।

यहाँ जैसे जल से भरे हुए कुँए रहते वैसे वहाँ अमृत से भरे हुए कुँए रहते उस अमृतरुपी जल से सभी संत स्नान करते है। वहाँ संत जो वस्त्र पहनते है वे वस्त्र भी अमर रहते है, यहाँ के सरीखे फटनेवाले वस्त्र नहीं रहते है। वहाँ के संत जब हँसते है तो उनके मुख से मोती बरसते और वे जहाँ जहाँ पैर रखते है वहाँ वहाँ कुद्रती पैरो को सुख देनेवाले मुलायम हिरे प्रगटते है। ।।६८।।

चित्रावण बन कळ ब्रछ फूले ।। बरसे इमरत धारा ।।

अमर जडी अमर फळ निपजे ।। पावे सन्त जन सारा ।।६९।।

वहाँ संत जिस सुख का चितवन करते है वह चितवन पुरा करनेवाले चिंतामणी बहुत है। वहाँ संत जिस सुख की कल्पना करते है उन सुखों को प्रगट करानेवाले कल्पवृक्ष के बनके बन फुले है। वहाँ आंनद देनेवाले अमृत की धाराये बरस रही है । वहाँ देह को अमर करनेवाली अमर जडीयाँ तथा अमरफल नित्य निपजते है। ये चिंतामणी से निपजनेवाले सुख,कल्पवृक्षसे निपजनेवाले सुख,अमृत धारावो से निपजनेवाले सुख,अमरफल तथा अमरजडी से निपजनेवाले सुख सभी संत जन पाते है। ।।६९।।

पावे सन्त अमर होय बैठा ।। बोर न जामण मरणा ।।
कह सुखराम प्रमपद पुंथे ।। सो पिस्तावा करणा ।।७०।।

अमृत पिकर,अमर जडी खाकर तथा अमरफल खाकर वहाँ के सभी संत अमर होके बैठे है। वे संत कभी भी जन्म-मरण के फेरे मे नही आते। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर नारीयो को कहते है कि,जैसे अनंत संत मनुष्य तन से रामजी की भक्ति करके परमपद पहुँच गये और आवागमन का चक्कर काटकर महासुख मे लिन हो गये है वैसा मैं चौरासी लाख योनीयो का महादु:ख भोगकर मनुष्य देह में आया हूँ परंतु मैंने अभी तक रामजी का स्मरण कर चौरासी लाख योनीयो का चक्र नहीं काटा और अमोलक मनुष्य देह का समय माया मोह में,विषय वासना के सुख में लगाकर बिता रहा हूँ यह हो रहे नुकसान का पस्तावा करो और बिना विलंब परमपद पहुँचने की विधी धारण करो ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर-नारीयो को कह रहे है। ।।७०।।

प्रमपिस्तावो नांव ग्रंथ को ।। कियां प्रमपद पावे ।।
कह सुखराम ओर पिस्तावा ।। करे स खोटा खावे ।।७१।।

इस ग्रंथ का नाम परम पस्तावा है। इस ग्रंथ मे मनुष्य देह में आकर रामजी की भक्ति नहीं की तो हर मनुष्य तथा देवता चौरासी लाख में जाने के बाद कैसे पछ्तावा करते यह कथा है। यह पछ्तावा छोड्कर मायाके पद प्राप्ती का मनुष्य जो भी पछ्तावे करता वह उलटा ४३,२०,००० साल तक चौरासी लाख योनीके दु:ख में पड्ने का खोटा याने चक्कर खाने का पछ्तावा है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर-नारीयो को बता रहे है। ।।७१।।

देह छता अेसा सुख देखे ।। पुंता पुरष समाधी ।।
कहे सुखराम बिना कोईपूंथा ।। सुण सुण बदे बिवादी ।।७२।।

मृत्यूलोक के संत अपने देह मे ही ब्रम्ह समाधी मे पहुँचने के बाद परमपद के सभी सुख देख लेते है। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,ऐसे मृत्यूलोक के संतोंद्वारा समाधी मे देखे हुए परमपदके सुख परमपद मे न पहुँचे हुए नर-नारी सुन-सुनकर बिना आधार के उन पहुँचे हुए संतों के साथ वाद विवाद करते है। ।।७२।।

सुभ करम कर सुरगां जावे ।। असुभ किया चोरांसी ।।
कह सुखराम भक्त कर केवळ ।। प्रमधाम जन जासी ।।७३।।

हंस जैसे शुभ कर्म करके स्वर्गादिक पहुँचते,अशुभ कर्म करके नरक तथा चौरासी लाख योनी में पड्ते। इसीप्रकार आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,केवल भक्ति करके हंस परमधाम जाते। ।।७३।।

दोहा ।।

नर तन मे पिस्ताय के ।। रहे राम लिव लाय ।।
से हंसा सुखराम कह ।। अमरा पुर कुं जाय ।।७४।।

जो नर, नर तन मे पिछ्ले ८४ लाख योनी के दु:ख याद कर अभीतक परमपद नहीं पाने का पछ्तावा करते है और परमपद पाने के लिए रामजी से लिव लगाते है वे नर अमरापूर के महासुख में ही पहुँचते है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है। ।।७४।।

इण कारण भटकत फिरे ।। तीन लोक के मांय ।।
आड़ा बादळ भ्रम का ।। सत्तगुर सुजे नाय ।।७५।।

माया मे चाहिए वह सुख है मानकर वेद,व्याकरण,शास्त्र,ब्रम्हा,विष्णु,महेश,शक्ति इनके मायावी भक्तियो मे लगकर तीन लोक मे काल का दु:ख भोगते फिरते और हर पल सुख मिलाने के लिए जहाँ वहाँ भटकते फिरते। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है, जैसे सुरज के आडे बादल आ जाने से प्रकाश देनेवाला सुरज सुजता नहीं वैसेही मायावी भक्तियों में दु:ख रहीत सभी सुख है ऐसी भ्रमित समज हो जाने के कारण तृप्त महासुख देनेवाले सतगुरु सुजते नहीं। ।।७५।।

गुर बिरम किरपा करी ।। दीनी भगत बताय ।।
नि: तर तो सुखराम केहे ।। हुंई रेतो पिस्ताय ।।७६।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,मुझपर मेरे सतगुरु बिरमदासजी महाराजने केवल भक्ति देने की कृपा की। अगर वे मुझे केवल भक्ति देने की कृपा नही करते थे तो मैं भी भ्रमो मे उलझकर देवी-देवताओ के भक्ति मे लगा रहता था और शरीर छुटने पर ८४ लाख योनी में केवल भक्ति नहीं मिली इसका पलपल पछ्तावा करता था। ।।७६।।

प्रम पिस्तावो नांव ग्रंथ को ।। जे कोईलहे बिचार ।।
भगत ऊपजे भे मिटे ।। पुंथे मोख दुवार ।।७७।।

इस ग्रंथ का नाम परम पस्तावा है। इस ग्रंथ को जो जो हंस ज्ञान से समजेगे उन सभी हंसों में केवल भक्ति उपजेगी और उन सभी का काल तथा जन्म-मरण का भय सदा के लिए मिट जायेगा और सभी हंस सदा के लिए महासुख के मोक्ष द्वार मे पहुँचेगे। ।।७७।।

।। इति श्री प्रम पिस्तावा ग्रंथ संपूरण ।।